

चिंतन

पुतिन के सामने शांति का मार्ग चुनने का अवसर

रु स में अपेक्षित रूप से व्यादिमी पुतिन की जीत वैश्वक स्तर पर परिचय की टेस्ट बढ़ने वाला है। परिचय की नाटों थीरों के मुखर विरोधी पुतिन के अधिक ताकतवर बनकर सत्ता में लौटने से अमेरिका के योगों के कुछेक देशों के लिए वैश्वक स्तर पर शक्ति प्रदर्शन करना आसान नहीं होगा। देखें वाली बात यह होगी कि परिचय पुतिन से कैसे निपटा है? पुतिन की जीत यूं तो रूसी लोकतंत्री की प्रायोजित जीत जैसी है, जिसमें जनता की महर केवल औपचारित भर थी, लेकिन इस जीत की व्याज्ञा यूक्रेन से जंग के फैसले पर भी जनता हासिल करने के रूप में की जाएगी। आज के रूप में, यूक्रेन का उद्देश्य अपने शासकों के निर्णयों को मान्य करना है, न कि लोगों की इच्छा के बारे में जानना है। रूस के इतिहास में आठवाँ बार राष्ट्रपति चुनाव के लिए मतदान हुआ है। परिचय का फैसला रूसी जुनाना की किसी के लिए भी हैरानी की बात नहीं है। साल 2000 में बोरिस येल्ट्सिन के स्थान पर राष्ट्रपति बने पुतिन ने चार साल का समय छोड़ कर, 24 साल तक देश पर प्रभावी रूप से शासन किया है। पुतिन ने स्पष्ट रूप से यूक्रेन में अपनी पसंद के युद्ध को परिचय के साथ व्यापक, दीर्घकालिक संघर्ष के रूप में प्रस्तुत किया है। उनका मानना है कि परिचय असरवित है, पतन की ओर है और आसानी से विचालित हो जाता है। यूक्रेन को आगे की सैर सहायता पर परिचयी देशों की दिक्कत, पुतिन को और अधिक प्रोस्त्रित करेगी। वे अपनी सफलता से उत्साहित होकर, आगे जोखिम भरे और उत्तेजक दुस्साहित पर उत्तर सकते हैं। ऐसे में पुतिन और जोखिम भरे और उत्तेजक दुस्साहित पर उत्तर सकते हैं।



विलेषण

अवधेश कुमार

वास्तव में बाहुबलियों के प्रभाव से चुनाव काफी हद तक मुक्त हुआ है लेकिन धनबल का वर्चस्व बढ़ाया गया है। हर चुनाव में देखा गया है कि अलग-अलग तरीकों से उम्मीदवार के लोग मतदाताओं तक धन पहुंचाने की कोशिश करते हैं। धनबल के प्रभाव पर आयोग ने चिंता व्यक्त की है तो यह सबकी जिम्मेदारी है कि आयोग और प्रशासन को सहयोग करते हुए चुनाव को धन के प्रभाव से मुक्त करने में सहयोगी बने। इसी तरह चुनाव अयोग ने फेक न्यूज को लेकर बात की है। सोशल मीडिया और कई बार मुख्य मीडिया के माध्यम से अलग-अलग तरीकों से ऐसे झूट फैलाए जाते हैं जो पहली दृष्टि में देखें तो 16 राष्ट्रपतियों का चुनाव भी इसी तरह संपन्न कराया जा चका है।

निश्चित रूप से इसमें चुनाव आयोग की प्रमुख भूमिका होती है लेकिन राजनीतिक प्रतिष्ठान और मतदाताओं का अपनी व्यवस्था के प्रति सम्मान और अनुसरण होनी होती है। हम अपनी व्यवस्था, राजनीतिक दलों, मतदाताओं की सोच और व्यवहार की आलोचना करते हैं पर संभवी लोकतंत्र का जो ढांचा, उससे जुड़ी हुई जो व्यवस्थाएं हमारे समक्ष उपस्थित हैं और विश्व समुदाय की प्रशंसना पाती हैं, वह इनके बारे में संभव नहीं हो सकता। इस चुनाव की विशेषता यह है कि पहली बार 1 करोड़ 82 लाख मतदाता पहली बार अपना वोट डालेंगे 20 से 29 वर्ष के बीच के मतदाताओं की संख्या 1 करोड़ 74 लाख है। इतनी बड़ी युवा आवादी की देखा का विषय होती है और मतदान द्वारा भवित्व के सत्ता और विकास की भूमिका तथा धन के प्रभाव से मुक्त करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

कई भी व्यवस्था संपूर्ण रूप से दोषहित नहीं होती। किंतु इसनी संभाल में मतदाताओं के संभालने के लिए लगभग 1.5 करोड़ चुनाव अधिकारी और सुरक्षा कर्मियों के साथ 2100 पर्यवेक्षकों की भूमिका होती है। कुल 3 लाख 40 हजार से अधिक सुरक्षा बल के जवान तैनात होंगे। लोकसभा चुनाव में साधु पुरुषों की गणना के लिए भेजा तो दुर्बुध को कोई साधु पुरुष मिला ही नहीं। यह दुर्योग की छिद्राचेषी दुर्व्यक्ति का परिणाम था। इसके विपरीत युविधिष्ठि को कोई दुर्जन व्यक्ति नहीं मिला। वास्तव में दूसरे के दोष देखने का अधिकार उसी को है, जिसमें वह बुराई न हो।

'छिद्राचेषण', जो लोग दूसरों ने दूढ़ते हैं दोष

लोग प्रायः दूसरों में दोष दूंदने में लगे रहते हैं। इसी को छिद्राचेषण कहते हैं। ऐसा करने वाले लोग अपने बड़े-बड़े देशों को देखते हुए भी नहीं देख पाते। फिर भी दूसरों में दोष निकालने से बाज नहीं आते। यह प्रवृत्ति ने केवल स्वयं के लिए, अपिगु समाज के लिए भी घाटक है। इसी कारण समाज में ईर्ष्या, द्वेष और वैमनस्य का परिवेश बनता है। इसका सर्वाधिक विरोध प्रभाव उन लोगों के मोबाइल पर पड़ता है, जो ईमानदारी से समाज और देश की सेवा कर जीवन यापन करना चाहते हैं। छिद्राचेषी प्रवृत्ति अमूमन उन्हीं लोगों में देखने को मिलती है जो सर्वयुवाओं के भंडार होते हैं। इससे उनकी सकारात्मक ऊजां का निरंतर धरण होता है और सर्वयुवाओं की भूमिका होती है। इसीलिए चाणक्य ने कहा है, 'मनुष्य की वह प्रवृत्ति की भूमिका अपने भीर सदृष्टों का विकास नहीं होने देती।' परिणामस्वरूप मन, वाणी और कर्म तीनों के कल्पिष्ठ हो जाते हैं। महाभारत में दुर्योग छिद्राचेषी दुर्व्यक्ति का प्रवृत्ति हो जाता है। उसने कभी अपने दोष देखने का प्रयत्न नहीं किया। इससे उसके मन, वाणी और कर्म में सभी कर्मियों के गणना के लिए भेजा तो दुर्बुध को कोई साधु पुरुष मिला ही नहीं। यह दुर्योग की छिद्राचेषी दुर्व्यक्ति का परिणाम था। इसके विपरीत युविधिष्ठि को कोई दुर्जन व्यक्ति नहीं मिला। वास्तव में दूसरे के दोष देखने का अधिकार उसी को है, जिसमें वह बुराई न हो।

संकलित
दर्थन

पुर्तगाली अतीत से सनातन की ओर लौटता गोवा

गो वा की इमज़ इस तरह की बनाई जाती रही कि मानो ये भारत में यूक्रेन का कोई अंग हो। हां, गोवा पर लंबे समय तक पुर्तगाल का नियंत्रण रहा। उसका असर होना चाही है पर गोवा अब अपने सनातन और भारतीय मूर्यों से जुड़ने को बेकरार है। विचार्यों के बाबत विदेशी प्रभाव और हस्तक्षेप के बाबजूद गोवा लगातार भारतीय परिपाय के साथ जड़ रहा। जिस गोवा के सांस्कृतिक अकारण के लेकर कभी ऐसे परवाने जैसे दिग्गज लोखब कहते थे कि सम्प्रदाय के किनारे भारत का यह हिस्सा वेस्टर्न कल्पर का ईस्टर्न गेटवे है, वह गोवा आज सनातन और अध्यात्म के साथ अपने कल्परल डीएनए पर नाज कर रहा। गोवा का यह नाज वह के मुख्यमंत्री डॉ. प्रमोद सावंत के सकल के साथ और मजबूत हुआ है। उन्होंने गोवा के पर्टन को आध्यात्मिक राष्ट्रवाद का नाम दिया है।

बात करते गोवा की तो वहां की मौजूदा स्थिति के बारे में बात करने के लिए जरूरी है कि भारतीय स्वाधीनता संघर्ष को विचार और नेतृत्व की एक सीधे में देखें की चूक जाने खड़ा हुई है, पर यह चूक आज दोर्घनु नहीं बल्कि दिवंगत है। भारतवोध की समझ और रोशनी में भारतीय राष्ट्रीय आदोलन को देखने की ललक आज लाली में जहां स्वाधीनता को लेकर भारतीय मूल्य की गहरी जड़ों की हम शिनाखन करा रहा है, वहीं गोवा सुकृति संघर्ष जैसे सुनहरे परेशान भारत के गैरवशाली इतिहास से प्रमुख विचार हैं। गोवा के पुर्तगालियों के 450 सालों के राज से 19 दिसंबर 1961 को आजादी मिली थी जब भारतीय सेना ने कार्वां करते हुए सिर्फ़ 36 घंटे में गोवा को आजाद कराया था। तब से हर साल 19 दिसंबर को गोवा मुक्ति दिवस मनाया जाता है। सामाजिक विचार के अपर्याप्त विवरण और विचार की ताकत वाली जैसे स्वरूप भी देखने का अधिकार उसी को है, जिसमें वह बुराई न हो।

बात करते गोवा की तो वहां की मौजूदा स्थिति के बारे में बात करने के लिए जरूरी है कि भारतीय स्वाधीनता संघर्ष को विचार और नेतृत्व की एक सीधे में देखें की चूक जाने खड़ा हुई है, पर यह चूक आज दोर्घनु नहीं बल्कि दिवंगत है। भारतवोध की समझ और रोशनी में भारतीय राष्ट्रीय आदोलन को देखने की ललक आज लाली में जहां स्वाधीनता को लेकर भारतीय मूल्य की गहरी जड़ों की हम शिनाखन करा रहा है, वहीं गोवा को पुर्तगालियों के 450 सालों के राज से 19 दिसंबर 1961 को आजादी मिली थी जब भारतीय सेना ने कार्वां करते हुए सिर्फ़ 36 घंटे में गोवा को आजाद कराया था। तब से हर साल 19 दिसंबर को गोवा मुक्ति दिवस मनाया जाता है। सामाजिक विचार के अपर्याप्त विवरण और विचार की ताकत वाली जैसे स्वरूप भी देखने का अधिकार उसी को है, जिसमें वह बुराई न हो।

गोवा भारतीय आस्था और पंसरपाय का स्वर्ण करता के जगमगा रहा है, वह अभूतपूर्व भी दिवंगत है। गोवा यह नेतृत्व के बाबत करते हैं तो वह साफ कर रहे हैं। अंडित दीनायाल उपाध्याय अक्सर कहते हैं कि गोवा यह नेतृत्व के बाबत करते हैं तो वह साफ कर रहा है। और विचार का बाबत विदेशी परवाने के बाबत करते हैं तो वह साफ कर रहा है। जहां जनसंघ के जमाने से भाजाकी की जड़ें गहरी रही हैं। पंडित दीनायाल उपाध्याय अक्सर कहते हैं कि गोवा यह नेतृत्व के बाबत करते हैं तो वह साफ कर रहा है। गोवा भारतीय मूल्य और संस्कृति के बाबत करते हैं तो वह साफ कर रहा है। जहां जनसंघ के जमाने से भाजाकी की जड़ें गहरी रही हैं। पंडित दीनायाल उपाध्याय अक्सर कहते हैं कि गोवा यह नेतृत्व के बाबत करते हैं तो वह साफ कर रहा है। गोवा भारतीय मूल्य और संस्कृति के बाबत करते हैं तो वह साफ कर रहा है। जहां जनसंघ के जमाने से भाजाकी की जड़ें गहरी रही हैं। पंडित दीनायाल उपाध्याय अक्सर कहते हैं कि गोवा यह नेतृत्व के बाबत करते हैं तो वह साफ कर रहा है। गोवा भारतीय म

